॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥
श्रीसीताराम दशश्लोकी
प्रणेता
जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज

*   श्रीसर्वेश्वरो जयति   *

।।   श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः   ।।

श्रीसीताराम दशश्लोकी

प्रणेताः--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

वि. सं. २०७३   निम्बार्काब्द ५०११

।। श्रीसर्वेश्वरो जयति ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

समर्पणम्

सीतारामपदाम्भोजे सर्वानन्दप्रदायिके।
सश्रद्धमर्प्यतेभक्त्या श्रीप्रेमाभक्तिसम्प्रदे।।

श्रीसीतारामपदकञ्जपरागकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

शुभमितिः-चैत्र शुक्ल ९ मंगलवार वि. सं. २०७३
दिनांक-१५/४/२०१६

श्रीसीताराम-दशश्लोकी की महिमा

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की अभिनव रचना परम कल्याणकारिणी है। श्री ''श्रीजी'' महाराज की यह रचना इस सिद्धान्त की प्रमापिका है कि ''सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।'' श्री ''श्रीजी'' महाराज निम्बार्क सम्प्रदाय के जगद्गुरु, संरक्षक, संपोषक एवं संवर्द्धक होते हुए भी बहुत उदारचेता हैं। ज्ञान-भक्ति और वैराग्य की त्रिवेणी में सम्प्रदाय भेद एवं सीमाएँ विलीन हो गई हैं। ''भूमा वै सुखं नाल्पे सुखमस्ति'' जो भूमा है वही पूर्ण सुख का स्थान है। अल्प में सुख नहीं है। पूर्णता की प्राप्ति के इच्छुक जीव को भूमा की ही उपासना करनी चाहिए। देश-काल तथा वस्तु आदि के आवरण से रहित, सबके आश्रयभूत श्रीकृष्ण अथवा श्रीराम ही भूमा शब्द से कहे गए हैं। ये दोनों महाविष्णु के ही अवतार कहे जाते हैं तथा उनसे अविनाभाव में उपस्थित लक्ष्मी ही जब महाविष्णु देव विग्रह धारण करते हैं तब तदनुरूप विग्रह धारण करती है जैसे कहा गया है-राघवत्वे भवेत् सीता, रुक्मिणी कृष्णजन्मनि। अन्येषु चावतारेषु विष्णोरेषाऽनपायिनी।'' विद्वानों में केवल संज्ञा (नाम) में ही भेद है तत्त्व में भेद नहीं (नाम्न्येव विदुषां विवादः, एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति)। कहीं पर श्रीकृष्ण को अवतार न कहकर अवतारी कहा गया है तात्पर्य यह है कि परब्रह्म

श्रीकृष्ण ही राम और श्रीकृष्ण आदि के रूप में अवतार लेते हैं। अवतारी और अवतार में अभेद है केवल कार्य का भेद प्रयोजन वश रहता है। श्री "श्रीजी" महाराज अभेद की भावभूमि पर स्थित होकर "श्रीसीताराम दशश्लोकी" अभिव्यक्त कर रहे हैं।

इस सम्पूर्ण वसुन्धरा के मानवों को श्रीराम और श्रीकृष्ण के चरित और उपदेश ने जितना प्रभावित, आकर्षित एवं प्रेरित किया है वैसा अन्य ने नहीं। इसका कारण भी विद्यमान है जहाँ श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं वहीं श्रीकृष्ण लीलापुरुषोत्तम हैं। श्रीराम के चरित से सनातन समाज में परिवार, देश और मानवता के प्रत्येक सम्बन्ध की मर्यादा नियत हुई है। मुनि वाल्मीकिजी ने सभी को आत्मकल्याण का उपदेश करने वाले श्रीनारदजी से पूछा कि वर्तमान में (न कि भूत या भविष्य में) इस लोक में कौन ऐसा पुरुष है जो गुणवान् है, वीर्यवान् है, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवाक्, दृढव्रत है। कौन ऐसा है जो चरित्रवान् है तथा सभी भूतों के हित में रत है। जो विद्वान् है, समर्थ है, प्रियदर्शी है, आत्मवान्, जितक्रोध, द्युतिमान्, असूया रहित है। कौन है जिसके क्रोधित होने पर देवता भी काँपते हैं?

परमज्ञानी श्रीनारदजी ने कहा कि इन सभी गुणों का वैसे तो एक में मिलना कठिन है किन्तु इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न श्रीराम नियतात्मा, नीतिवान्, वाग्मी, धर्मज्ञ आदि सभी गुणों से युक्त हैं।

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनै श्रुतः।

नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।
धर्मज्ञः सत्यसंधश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।

श्रीनारदजी वाल्मीकि को कहते हैं कि राम यद्यपि ब्रह्म ही है तथापि लोक शिक्षार्थ वे प्रजापति के सदृश हैं, जीवलोक और धर्म के रक्षक हैं, वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञ तथा सभी गुणों से पूर्ण है, श्रीराम समुद्र के समान गम्भीर, सोम के समान प्रियदर्शन है तथा क्रोध में कालाग्नि के समान है और क्षमा में पृथिवी के समान हैं। श्रीनारदजी के उपदेश से वाल्मीकि ऋषि से कवि बन गए अन्तर्मुखी से बहिर्मुखी बन गए, आत्मसाधक से लोक साधक बन गए, आत्मदर्शक से लोक के मार्गदर्शक बन गए।

श्रीराम के विराट् व्यक्तित्व एवं महनीय आदर्श स्वरूप का इस लोक में इतना प्रभाव हुआ कि देश और काल की सीमा को लांघकर यह आदर्श अनेक देशों में व्याप्त हो गया सम्पूर्ण मानव राम के आदर्श का अनुगामी बनने के लिए प्रयत्नशील हो गया। संसार की कोई भी ऐसी कला नहीं है जिसने रामचरित को अपना विषय नहीं बनाया हो चाहे वह काव्य हो, गीत, संगीत, मूर्ति आदि कला हो। यहाँ तक कि सूने खेत में ढेर किए अनाज पर श्रीराम की मुद्रा लगाना हो। कवियों के लिए तो रामकथा कण्ठहार बन गई है। कहा है- ''राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।''

राम के सर्वव्यापी तत्त्व रूप को भी सभी ने स्वीकार किया है। राम के विविध रूपों के मर्म को कबीर ने अभिव्यक्ति दी है-"एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट घट वासी। एक राम का जगत् पसारा यह मर्म कोई नहीं जानी।" राम सनातन धर्म और मानव के अस्तित्व की पहचान है। राम ने ही "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" इस वैदिक उद्घोष का प्रखर शब्दों में अनुमोदन करते हुए कहा-"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"

योगीजन राम (परमात्मा) में रमण करते है या राम (परमात्मा) समस्त भूतों में रमण करता है-इन दोनों अर्थों को रामशब्द अपने में समाए हुए है। राम का नाम तारक मन्त्र है यह भवबीजों का विनाशक है। साधकों को यह नाम अतिप्रिय है।

श्रीराम एक आदर्श राजा हुए हैं उनका राज्य सर्वोत्तम माना जाता है। सभी प्रकार की भौतिक सुख सम्पदा के साथ आध्यात्मिक उन्नति की प्राप्ति रामराज्य में है।

श्री "श्रीजी" महाराज ने अपनी दशश्लोकी में राम के विराट् चरित का संकेत रूप में वर्णन कर दिया है। इन दस श्लोकों में जगज्जननी सीताजी, पावन सरयूजी, अयोध्याधाम, भरतजी, लक्ष्मणजी, राक्षसी प्रवृत्तियों का विनाश, मुनिजनों का स्मरण, शरणागति वत्सलता एवं राम के मोक्षदातृत्व एवं ब्रह्मरूप को विषय बनाया गया है। राम का चरित शतकोटि विस्तृत है एक-एक अक्षर भी महापातक का विनाशक है--

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।।

श्री "श्रीजी" महाराज की पुण्यावाक् के साथ हम भी यही उच्चारण करें--

आपदामपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

अपि च

श्रीरामो विष्णुरूपो वै सर्वलोकेषु विश्रुतः।
धरायां न समस्तस्य लोकोपकारको नरः।।
तस्य गुणसमाख्याने यतन्ते कवयः सदा।
नामस्मरणमात्रेण तरन्ति भवसागरात्।।
स वै मानुषरूपेण स्थापयति गुणान् सदा।
अखिलादर्शरूपेण सर्वसम्बन्धभासकान्।।
दिव्या सुमधुरा वाणी आचार्यस्य महात्मनः।
पुनाति वैष्णवान् सर्वान् रामगुणप्रकाशिका।।

श्री 'श्रीजी' महाराज का कृपापात्र-
निम्बार्कभूषण डॉ. **दूलीचन्द शर्मा** साहित्याचार्य
मुरलीपुरा (जोबनेर) वास्तव्य
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
जि. अजमेर (राजस्थान)

सीताराम दशश्लोकी में निबद्ध अनुपम भक्तिनिष्ठा

हम अपनी तुच्छबुद्धि से जितना भी विमर्श कर सकते हैं, वह सब सर्वथा सीमित रहता है। कथमपि निर्धारित सीमांकन से बहिर्गमन करने की सम्भावना लेशमात्र भी शेष नहीं रहती है। उसमें प्रविष्ट अहंकार, बुद्धि को जटिल कर देता है। इस क्षणभंगुर अल्पज्ञ मानव जीवन में यह बुद्धि की जडता जीवमात्र को भगवत्कृपा से सर्वथा दूर कर देती है। शास्त्र कितना भी गम्भीर घोष करें कि ''दुर्लभो मानुषो देहो, देहिनां क्षणभंगुरः।'' मनुष्य जीवन सुदुर्लभ है, अनेक जन्मों में कृत सुकृत संचय द्वारा यह उत्तम अवसर संप्राप्त है, एतदर्थ अशेषगुणगणनिलय, परम कृपावत्सल, दीनदयालु अखिलेश्वर श्रीसर्वेश्वर भगवान् के युगलचरणारविन्दों में स्वयं को समर्पित कर संसार सागर से समुत्तीर्ण होने का परमार्थ प्राप्त करें। तथापि हम भगवान् की बलवती माया से विमुग्ध होकर सर्वथा नश्वर शारीरिक गुणों में ही आकण्ठ निमज्जित रहते हैं। उसमें भी आज सर्वत्र प्रसरित इस कलिकाल की विकराल वेला में, कैसे मानव आत्म कल्याण का चिन्तन कर सकता है? भौतिक सुखों में आबद्ध जीवन, भगवद्दर्शनार्थ कैसे प्रेरित हो सकता है? येनकेनप्रकारेण अर्थोपार्जन निरत जीवन, उत्तमश्लोक चिन्तन परायण कैसे बन सकता है?

उच्छृंखलता को ही स्वतन्त्रता मानने वाले, मर्यादा से परिवेष्टित उत्तम चरित्र का अनुगमन कैसे कर सकते हैं? इन सब प्रश्नों का एकमेव समाधान इस समय दृष्टिगोचर हो रहा है। तपः स्वाध्याय, धर्मनिष्ठ, वीतराग, संस्कृत–सनातनधर्म–संस्कृति संरक्षणैकव्रती अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरण–देवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की अनवरत की जा रही भगवद्–भक्तिरसपूर्ण संस्कृत साहित्यसाधना। यही साधना सम्प्रति भगवदुपासना का सरल सन्मार्ग हम सबके लिये प्रशस्त करती है। निम्बार्क सम्प्रदाय ही नहीं समस्त सनातन धर्मनिष्ठ मानव मात्र को सनातन धर्म की अपूर्व स्वरूप वैशिष्ट्य का निदर्शन, पूज्य आचार्यश्रीचरणों द्वारा विरचित सत्साहित्य में परिलक्षित होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता का यह भगवद्वचन "यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवतिभारतः, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।" हम सब जानते हैं कि धराधाम में जब–जब भी अधर्म का मण्डन होता है तब–तब भगवान् स्वयं उसका समुचित निराकरण करते हैं। इस प्रसंग को हम इस प्रकार हृदयंगम करने का प्रयत्न कर सकते हैं कि अहैतुकीकृपावर्षण करने वाले भगवान् श्रीराधामाधव प्रभु आज भी अपने उन वचनों को पूर्ण करने में दृढ प्रतिज्ञ हैं, इसलिये विविध स्तोत्र स्वरूप धारण करते हैं। पूज्य आचार्यश्री–चरणों के हृत्प्रदेश में सर्वदा विराजमान रहते हुये सरस, सरल, गेय वाक्यस्वरूप से स्तोत्र बनकर हम अकिञ्चनों के कल्याणार्थ

अवतरित होते रहते हैं। ''आचार्यं मां विजानीयात्'' शास्त्र वचन सिद्ध करता है कि आचार्य स्वयं भगवत्स्वरूप होते हैं। वे भी वही करते हैं, जो भगवान् संकल्प करते हैं। अतः लोक में भगवद्वचन कभी निष्फल नहीं होते हैं, हमारी बुद्धि की जडता है कि अपनी सीमा में बंधी हुई इस असीम संरचना को नहीं जानती। पूज्य आचार्यश्री की कृपा से ही उस सीमा को तोड सकने में हम समर्थ हो सकते हैं। इसकी शक्ति तभी प्राप्त होगी जब हम भगवत्स्वरूपनिष्ठ सत्साहित्य में स्वाध्यायनिरत होंगे।

अभी-अभी पूज्य आचार्यश्रीचरणों द्वारा सद्यः विरचित ''सीतारामदशश्लोकी'' का स्वाध्याय करने का अपूर्व अवसर इस अकिंचन को प्राप्त हुआ। सुमधुर गीति छन्द इन्दिरा (कनक-मञ्जरी) में निबद्ध दशश्लोकी में ''रामो विग्रहवान् धर्मः, यह शास्त्रवचन पूर्णतः मूर्तिमान् है। किं वा दशकं धर्मलक्षणं'' के अनुरूप धर्मस्वरूप अहिंसा, सत्य, अस्तेय धृति, क्षमा आदि का समवेत स्वरूप ''सीतारामदशश्लोकी'' है। इसमें निबद्ध अनुपम भगवद्भक्ति निष्ठा की अनुभूति हम कर सकते हैं।

लोकोपकार हेतु रावणादिक दुरितदमनार्थ अविराम विचरण करना मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् दशरथात्मज श्रीरामलला का परम अवधेय है। अवधपुरी का दिव्य वैभव परित्याग कर जनकात्मजा जगज्जननी माता जानकी एवं शेषावतार लघुभ्राता लक्ष्मण सहित कुसुमकोमल पादपद्मों से विना पदत्राण ही दण्डकारण्य का परिभ्रमण कर रहे हैं। आकाश में अवस्थित

सुरवृन्द अभिराम चरित्र का दर्शन कर गुणगान कर रहे हैं। अरण्य निवासी मुनिवृन्द अनुपम छवि दर्शन कर मन्त्रमुग्ध हो रहे हैं। ग्रामीणजन यह अवलोकन कर अपने नेत्रों को सफल कर रहे हैं। पूज्य आचार्यश्रीचरणों ने अशेष दिव्य भावों को सूत्ररूप में इन दो श्लोकों में समाहित कर दिया है।

मधुरसुन्दरो रामराघवः स्वतुलवैभवः शस्त्रशोभितः।
व्रजति सौभगः कञ्जलोचनो विधिशिवार्चितः सीतयायुतः।।३।।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रघुनन्दन श्रीरामचन्द्र प्रभु के वैभव का परिवर्णन करना सम्भव नहीं, उनकी शोभा शरचाप धारण करने से और विशेष बन गई है। ब्रह्मशिवादि से पूजित कमललोचन मधुर सुन्दर रामराघव लोकहितार्थ विचरण कर रहे हैं।

निखिल निर्जरैश्चारुचर्चितो, नवलपद्मगुच्छाच्छहस्तकः।
दशरथात्मजः सद्भिरर्चितः, चलति संसृतौ दिव्यदर्शनः।।५।।

इस पंचम श्लोक में तो प्रत्यक्ष अभिराम श्रीराम की दर्शनानुभूति होती है। समग्र देववृन्दों से वन्दित, नूतन कमल पुष्पगुच्छ करकमल में धारण कर सुशोभित, दशरथनन्दन सन्तवृन्द से सुसेवित दिव्यदर्शन प्रदान करते हुये दण्डकारण्य के मार्ग में विचरण कर समग्र लोक को आनन्दित कर रहे हैं।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री ''श्रीजी'' महाराज की समस्त कृतियाँ भगवत्संकल्पनिष्ठ हैं। आज की विषम परिस्थितियों में मानवमात्र कल्याण की भावना से संपूरित

है। अथाह शास्त्रों का मनन चिन्तन कर पाना सर्वथा दुष्कर है। अतः आचार्यश्रीचरणों की इन लोकोपकारक कृति से शास्त्र विनिर्दिष्ट गहन मार्ग, भगवत्कृपाविशेष से अतीव सरल सिद्ध होता है। हम इनका पठन-मनन कर अवश्यमेव भगवत् सन्निधि प्राप्त कर सकेंगे। इत्यलम्

आचार्यचरणरजोभिलाषी :
निम्बार्कभूषण **मुकुन्दशरण उपाध्याय**
प्रधानाध्यापक-
राजकीय प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय
घसवां की ढाणी, सुरसुरा अजमेर
राजस्थान

तिलोत्तमा नगरपालिका १८
रूपन्देही जिला
लुम्बिनी अञ्चल
(नेपाल)

श्रीसीताराम भगवान् की दिव्य महिमा

भारतवर्ष की पावन वसुन्धरा पर जब आसुरी शक्ति का प्राबल्य हो जाता है तब विधि-शिव-पुरन्दरादिवृन्दारकवृन्दों की प्रार्थना पर भगवान् श्रीराम इस भूतल पर मनुज रूप से अवस्थित होते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता के परम प्रसिद्ध इन वचनों से स्वतः परिज्ञान हो जाता है। यथा--

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्त्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

वस्तुतः इसी प्रतिज्ञानुसार ही सर्वनियन्ता सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर कभी रामरुप में तो कभी कृष्णरूप में अवतीर्ण होकर आसुरी शक्ति का परिहार करते हैं।

ये परम कृपा के धाम है। भगवान् श्रीराम जनकनन्दिनी श्रीसीताजी सहित इस भूमण्डल पर प्रकट होकर रावण-कुम्भकर्णादि असुरों का सर्वरूपेण परिशमन करते हैं।

आपके नित्य दिव्य पार्षद सुग्रीव हुनमान-जाम्बवान आदिकों के साथ समस्त असुरों का संहार कर सर्वत्र अनादि वैदिक सनातन वैष्णव धर्म का प्रतिष्ठापन करते हैं। यथार्थ में दशरथनन्दन कौशल्यानन्दवर्द्धन श्रीराम की महिमा ही असीम अपार है।

भगवान् श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम है। श्रुति-पुराणादि शास्त्रों में श्रीराम महिमा का परिवर्णन परम मननीय है।

एक समय श्रीहनुमान्जी भगवान् श्रीराम जो अपने समस्त परिकरों सहित सिंहासन पर विराजमान थे। उस समय सहसा पवनतनय अञ्जनीनन्दन श्रीहनुमान्जी खड़े होकर नृत्य करने लगे। नृत्य करते हुए श्रीहनुमान्जी से राजीवलोचन नयनाभिराम भगवान् श्रीराम ने जिज्ञासा की। आप सभी तो शान्तभाव से बैठे हुए थे अकस्मात् खड़े होकर नृत्य करने लगे। क्या ? कारण है-

अतुलितबलधामा श्रीहनुमान्जी अपना भाव प्रकट करते हुए कहा "राम! त्वत्तोऽधिकं नामइति मे निश्चिता मतिः। त्वयैका तारिताऽयोध्या नाम्ना च भुवनत्रयम्। भगवन्!" आपसे बढकर आपका दिव्य नाम है और यह भी मैं अपनी सदसद्विवेकिनी मति द्वारा सम्यक् प्रकार से अनुभव करके ही अपना विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। क्योंकि आपने केवल अयोध्यावासियों का ही तारण किया किन्तु आपके परम पावन मङ्गलमय नाम ने तो त्रिभुवन का तारण किया, कर भी रहे हैं और सदा सर्वदा तारण करता ही रहेगा।

वस्तुतः श्रीहनुमान्जी यह दिव्य भाव अपने मानस में सतत अवधारणीय है।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

मिति-चैत्र शुक्ल ९ शुक्रवार

वि. सं. २०७३ दिनांक १५/४/२०१६

श्रीसीताराम दशश्लोकी

(१)

जनकनन्दिनी रामवल्लभा व्रजति पावने दिव्यमञ्जुले।
पथि च शोभने सौख्यदे शुभे सहचरी जनैर्भावभाविता।।

भगवान् श्रीराम की परमप्रिया जनकनन्दिनी श्रीसीताजी अपनी सहचरी परिकर के साथ जो परम भावना से युक्त है। ऐसी परम पावन दिव्य मनोहर श्रीअयोध्या के मार्ग में जो सर्वदा आनन्द प्रदायक है। उसके पावन मार्ग में पधार रही है।।१।।

(२)

सुसरयूतटे पादपान्विते सुरगणैर्नुते विप्रपूजिते।
विहरति प्रिया जानकी सदा शरणरक्षिका कञ्जलोचना।।

विविध प्रकार के वृक्षों से समन्वित कलकल कल्लोलिनी सरयू सरिता के सुभग पुलिन पर जो देवगणों सद्विप्रों के द्वारा प्रपूजित है ऐसी शरणागतों की रक्षा करने वाली अरविन्दनयन श्रीजानकीप्रिया सदा सर्वदा अयोध्या की धरित्री पर पधार कर विहार करती है।।२।।

(३)

मधुरसुन्दरो रामराघवः स्वतुलवैभवः शस्त्रशोभितः।
व्रजति सौभगः कञ्जलोचनो-विधि-शिवार्चितः सीतया युतः।।

जनकात्मजा श्रीसीताजी के सहित जो ब्रह्मा-शंकर आदि से प्रपूजित है ऐसे राजीवलोचन अतिमधुर और

सुन्दरातिसुन्दर श्रीअयोध्या धामपुरी के महाराज श्रीरामचन्द्रजी पधार रहे हैं।।३।।

(४)

प्रणतपोषकः शास्त्रचिन्तको-भरतलक्ष्मणाजस्रसेवितः।
सुरभिमल्लिका-पुष्पहस्तको-व्रजति नित्यदा रामभद्रकः।।

विविध शास्त्रों के परमज्ञाता शरण में आये हुए भगवद्जनों की रक्षा करने वाले सुगन्धित मल्लिका जुही–मोगरा आदि पुष्पों को अपने हस्तकमल में धारण किये हुए अपने अनुज श्रीभरत, लक्ष्मण आदिकों के द्वारा निरन्तर सेवित हैं। ऐसे भगवान् श्रीराम अयोध्यापुरी में पधार रहे हैं।।४।।

(५)

निखिलनिर्जरैश्चारुचर्चितो नवल-पद्मगुच्छाच्छहस्तकः।
दशरथात्मजः सद्भिरर्चितः चलति संसृतौ दिव्यदर्शनः।।

समस्त देवताओं के द्वारा जो परिसेवित है। नवीन कमल की कलियों को हाथ में लिए हुए सुशोभित सहचरीजनों से शोभायमान सन्त–महात्माओं के द्वारा परिपूजित महाराज दशरथ के आत्मज जिनके दिव्य दर्शन है ऐसे जगत् में सुशोभित रूप से पधार रहे हैं।।५।।

(६)

श्रुतिगणैः स्तुतः तन्त्रवर्णितो-मुनिजनप्रियश्चापहस्तकः।
अथ दयानिधी रावणान्तकः सुभगराघवो याति शोभनः।।

श्रुति–पुराण आदि शास्त्रों में जिनका वर्णन है। मुनिजनों के अत्यन्त प्रिय धनुर्धारी दया के सागर रावण कुम्भकरण आदि असुरों का अन्त करने वाले परम मनोहर भगवान् राघवेन्द्र श्रीराम अयोध्यापुरी में पधार रहे हैं।।६।।

(७)

नलिनलोचनः शान्तिदायको-निखिलगायकैर्कीर्ति संस्तुतः।
ललितभावुको रामराघवो वदति सुन्दरं दीनवल्लभः।।

राजीवलोचन शान्ति परमानन्द को प्रदान करने वाले उत्तमोत्तम गुणीजनों के मधुर संगीत से जिनकी स्तुति की जाती है। अति लावण्यरूप दीनवत्सल भगवान् श्रीरामचन्द्र अपने सुन्दर विचारों को अभिव्यक्त कर रहे हैं।।७।।

(८)

शुभधनुर्धरो राम उत्तमो-वनमहीरुहश्रेणिशोभितः।
मुनिवरैः सहप्रीतिदायको व्रजति सुस्मितास्याभदर्शनम्।।

सुन्दर धनुष को धारण किये हुये कदम्ब–कदली–वकुल आदि वृक्षों के समूह में अति सुशोभित अपनी पराभक्ति प्रदान करने वाले मुनिजनों के साथ स्मितानन (हँसमुख) ऐसे परम उत्तमस्वरूप भगवान् श्रीराम पधार रहे हैं।।८।।

(९)

असुरताडकाशीघ्रनाशकः सुवरदायको हार्ददर्शकः।
हनुमता सह प्राणिरक्षको विहरतीश्वरो ब्रह्मरूपकः।।

अपने दिव्य धनुष से आसुरी शक्ति सम्पन्ना ताडका का संहार करने वाले इच्छित मनोरथ को प्रदान करने वाले अपने अन्तःकरण में जिनका दर्शन होता है। श्रीहनुमानजी के साथ समस्त प्राणियों की रक्षा करने वाले परब्रह्म सर्वेश्वर श्रीराम विहार करते हैं।।६।।

(१०)

नवलरूपकः शान्तिसम्प्रदः सततसत्यवाक्सर्वमोहनः।
वदति सर्वदा साधुसङ्गमः शरणसाधको मङ्गलप्रदः।।

सदा नवनवायमान शान्तिप्रदायक सत्यवादी सबको प्रिय लगने वाले जिनकी सेवा में सदा सन्त-महात्मा रहते हैं। शरणागतों की रक्षा करने वाले मंगलरूप भगवान् श्रीराम अपने सुन्दर विचारों को अभिव्यक्त कर रहे हैं।।१०।।

(११)

सीतारामदशश्लोकी रामभक्तिप्रदायिका।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता।।

भगवान् श्रीराम की पराभक्ति प्रदान करने वाली श्रीसीताराम दशश्लोकी जिसकी रचना भगवान् श्रीराम की कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत है।।११।।

२०)

दिव्य अयोध्या दर्शन करिये।

सप्तपुरी में प्रथम नाम है, सरयूतट पर सुभग दरशिये।।

कनकभवन में शोभित राघव, जगकन्दिनी चरण पकरिये।

सकल सन्तजन नाम उचारत, राम राम कह अन्तर भरिये।।

मुनिवर नारद बीन बजावत, गावत हरि हरि धाम विचारिये।

रामलला प्रभु मधुर नाम है, बुधजन गावत शास्त्र सुमरिये।।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, राम-राम कह संसृति तरिये।।

अवधपुरी का सुयश अपार।

जहाँ विराजत रामचन्द्र प्रभु, शोभा अनुपम सतत अवधार।।

सुरगण गावत प्रमुदित होकर, वाद्य बजावत मंगलाचार।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, जय जय राघव मन्त्र उचार।।

अबधमही पर बजत बधाई।

देश-देश के आवत गुणिजन, प्रमुदित होकर सुम वरषाई।।

सकल सन्त भी पुलकित होकर, जय जय उचरत अति हरषाई।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, रामलला को हृदय बसाई।।

चैत सुदी शुभ नवमी आई।

दशरथनन्दन रामललाश्री, आज सुभग दिन सब हरषाई।।

श्रुति-पुराण सब वरणन करते, कोकिल कूजत बर बर धाई।

शरण सदा राधासर्वेश्वर, राम चरण शुभ प्रिय शरणाई।।
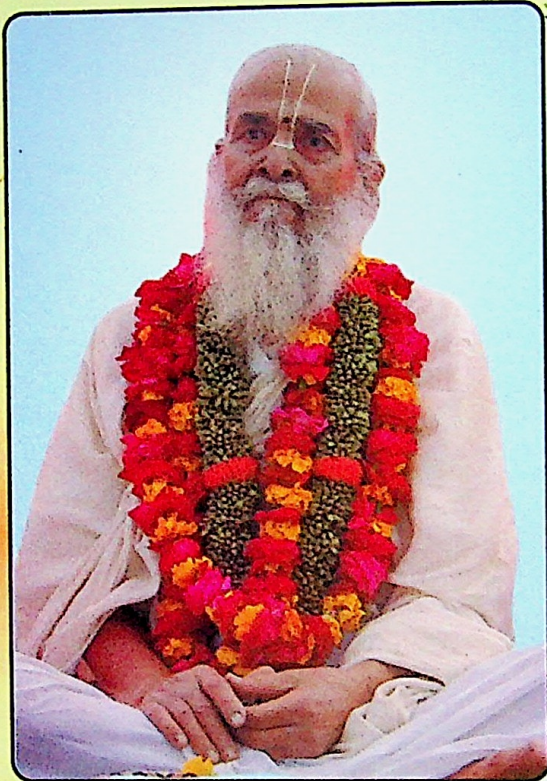
श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ -सलेमाबाद